



ज्ञानविधा

रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537

IIFS Impact Factor-2.25

Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025

Page No.- 05-11

©2025 Gyanvidha

www.journal.gyanvidha.com

डॉ. सेनापति नायक

पूर्व. प्रभारी प्राचार्य,
माँ एजुकेशन कॉलेज, पामगढ़,
जांजगीर-चांपा, शहीद नंदकुमार पटेल
विश्वविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़

Corresponding Author :

1. डॉ. संबित कुमार पाढ़ी

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास
विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

2. डॉ. राजेश्वरी गर्ग

सहायक प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास
विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डिजिटल युग में सोशल मीडिया : समाज और संस्कृति को परिवर्तनकारी आकार देता हुआ

शोध-सार

आज के डिजिटल युग में संचार का माध्यम बहुत ही प्रभावी हो गया है। निश्चित रूप से यह डिजिटल मीडिया आज के युग के लिए एक सशक्त एवं परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है। जिसके कारण न केवल समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है, बल्कि समाज तेजी से वैज्ञानिक तर्क के साथ अपनी एक नई परिभाषा गढ़ रहा है। लेकिन समाज का यह बदलता स्वरूप एक ओर उन्नत एवं कल्याणकारी है, वहीं दूसरी ओर यह ऐसे मार्ग की ओर अग्रसर है, जहां समाज पूर्ण रूप से बंधन मुक्त हो जाएगा। कोई बंधन एवं आधार नहीं होगा। जिसके कारण मानव समाज विकृति की ओर अग्रसर हो सकता है। इसलिए डिजिटल तकनीक के माध्यम से समाज एवं बिखरती संस्कृति को ऐसा आकार देना होगा जो मानव समुदाय के लिए कल्याणकारी, उन्नत एवं भविष्योन्मुखी विकास हो। तकनीकी प्रगति ने संचार, संस्कृति एवं समाज को एक नया आकार दिया है, जिसके कारण यह भौगोलिक सीमाओं से परे जाकर रियल टाइम कनेक्टिविटी एवं अन्तरक्रियाशीलता प्रदान करने में सक्षम हो गया है। इंटरनेट के विकास ने हमें न केवल संचार, बल्कि संस्कृति एवं समाज पर भी इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं के आधार पर इसके दूरगामी प्रभाव को देखने के लिए विवश किया है। इस डिजिटल युग में नवाचार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सूचना के प्रभाव में क्रांति के साथ, समाज में एक ऐसा बदलाव आया है जो इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करता है एवम डिजिटल मीडिया के बहुआयामी आयामों की जानकारी मिलती है। उपरोक्त लेख में डिजिटल तकनीक के माध्यम से समाज और संस्कृति को एक परिवर्तनकारी रूप देने की बात की गई है।

कीवर्ड: डिजिटल मीडिया; संचार; संस्कृति; प्रौद्योगिकी; अन्तरक्रियाशीलता; सूचना; मनोरंजन।

पृष्ठभूमि :

तकनीकी उन्नति और अंतर्संबंध के इस युग में, डिजिटल मीडिया बदलाव की अगुआई कर रहा है। डिजिटल मीडिया शब्द में टेक्स्ट और इमेज से लेकर वीडियो और इंटरैक्टिव अनुभवों तक की सामग्री का एक विशाल स्पेक्ट्रम शामिल है, जो सभी डिजिटल तकनीक द्वारा संभव हुआ है। डिजिटल मीडिया के व्यापक प्रभाव ने हमारे संवाद करने, सूचना का उपभोग करने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भाग लेने के तरीके को फिर से परिभाषित किया है। इंटरनेट, मोबाइल डिवाइस और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उदय ने सामग्री के प्रसार को तेज़ कर दिया है, जिससे ऐसा माहौल बना है जहाँ कोई एक साथ निर्माता और उपभोक्ता दोनों हो सकता है। जैसे-जैसे हम डिजिटल मीडिया के दायरे में उतरते हैं, हम एक बहुआयामी परिदृश्य को उजागर करते हैं जो हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ता है। डिजिटल मीडिया के प्रक्षेपवक्र, संचार गतिशीलता पर इसके प्रभाव, सांस्कृतिक आख्यानो को आकार देने में इसकी भूमिका और मनोरंजन और पत्रकारिता जैसे उद्योगों पर इसके प्रभाव का पता लगाता है। इसके अलावा, डिजिटल मीडिया के प्रसार से उत्पन्न चुनौतियों पर भी चर्चा करता है, जैसे: गलत सूचना का प्रसार, गोपनीयता के बारे में चिंताएँ और लत की संभावना। हालाँकि, इन चुनौतियों के बीच, डिजिटल मीडिया कई रोमांचक संभावनाएँ भी प्रदान करता है। डिजिटल मीडिया का प्रभाव सीमाओं को पार करता है, भौगोलिक विभाजन को पाटता है और दुनिया भर के लोगों को जोड़ता है। जैसे-जैसे हम इस निरंतर विकसित होते परिदृश्य में आगे बढ़ते हैं, हमारे समाज को आकार देने में डिजिटल मीडिया की भूमिका की आलोचनात्मक रूप से जांच करना और विचार-विमर्श को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण हो जाता है। डिजिटल मीडिया की जटिलताओं को समझकर, हम सांस्कृतिक आदान-प्रदान को समृद्ध करने, सूचना तक

पहुँच को लोकतांत्रिक बनाने और अपनी दुनिया को एक ऐसे भविष्य की ओर ले जाने के लिए इसकी शक्ति का उपयोग कर सकते हैं जहाँ कनेक्टिविटी और रचनात्मकता पनपती है। समकालीन परिदृश्य में, डिजिटल मीडिया एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है जिसने सूचना के निर्माण, वितरण और उपभोग के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव किया है। अपनी गतिशील, संवादात्मक और तात्कालिक प्रकृति के कारण, डिजिटल मीडिया पारंपरिक सीमाओं को पार करता है और दुनिया भर के लोगों को जोड़ता है और संचार, संस्कृति और समाज के विभिन्न पहलुओं को आकार दे रहा है। यह लेख डिजिटल मीडिया के बहुआयामी क्षेत्र में गहराई से उतरता है, इसके विकास, प्रभाव, चुनौतियों और तेजी से परस्पर जुड़ी दुनिया में इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों की खोज करता है। डिजिटल मीडिया समय के साथ तालमेल बनाए रखते हुए विकसित, प्रभावित, चुनौती और संभावनाओं को तलाशना जारी रखता है। डिजिटल युग ने समाज और संस्कृति को आकार देने के साथ-साथ एक-दूसरे से जुड़ने के नए और अलग-अलग तरीके खोजने और मनोरंजन में अपनी भूमिका को उजागर किया है। डिजिटल युग ने अपनी उन्नत तकनीक के साथ आज दुनिया में सूचना के उत्पादन, वितरण और उपभोग के तरीके में एक महत्वपूर्ण क्रांति ला दी है। इंटरनेट की शुरुआत से लेकर सोशल मीडिया के प्रसार तक, डिजिटल मीडिया ने हमारे जुड़ने, सीखने और खुद को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के तरीके को बदल दिया है।

डिजिटल मीडिया का विकास

डिजिटल मीडिया में टेक्स्ट, इमेज और ऑडियो से लेकर वीडियो और इंटरैक्टिव कंटेंट तक कई तरह के फॉर्मेट शामिल हैं, जो सभी डिजिटल तकनीक द्वारा सक्षम हैं। इंटरनेट का प्रसार और मोबाइल डिवाइस का उदय कंटेंट निर्माण को लोकतांत्रिक बनाने में महत्वपूर्ण रहा है, जिससे यह इंटरनेट कनेक्शन वाले किसी भी

व्यक्ति के लिए सुलभ हो गया है। इस बदलाव ने रचनाकारों और उपभोक्ताओं के बीच की रेखा को धुंधला कर दिया है, जिससे उपयोगकर्ता डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में सक्रिय भागीदार बन गए हैं। डिजिटल मीडिया ने उल्लेखनीय विकास किया है, जो प्रौद्योगिकी में प्रगति से प्रेरित है जिसने कंटेंट बनाने, साझा करने और उससे इंटरैक्ट करने के हमारे तरीके को बदल दिया है। डिजिटल मीडिया की यात्रा दशकों तक फैली हुई है, जो साधारण पिक्सेलयुक्त ग्राफ़िक्स से शुरू होकर इमर्सिव वर्चुअल रियलिटी में विकसित हुई है जो मानव अनुभव की सीमाओं को आगे बढ़ाती है। डिजिटल मीडिया के विकास में प्रमुख मील के पत्थर का पता लगाता है और इस दौरान हुए परिवर्तनकारी बदलावों पर प्रकाश डालता है। ग्राफ़िक्स, वीडियो और इंटरनेट 1990 के दशक में एक मल्टीमीडिया क्रांति देखी गई जिसने डिजिटल मीडिया को अधिक आकर्षक और इंटरैक्टिव माध्यम में बदल दिया। ग्राफ़िकल यूजर इंटरफ़ेस (GUI) की शुरुआत ने उपयोगकर्ता अनुभव में क्रांति ला दी, जिससे तकनीक अधिक सुलभ और उपयोगकर्ता के अनुकूल बन गई। डिजिटल कैमरों और वीडियो कम्प्रेसन तकनीकों के आगमन ने डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म में वीडियो सामग्री को शामिल करने का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे एक समृद्ध संवेदी अनुभव को बढ़ावा मिला। डिजिटल मीडिया के विकास में वास्तविक मोड़ इंटरनेट के व्यापक रूप से अपनाए जाने के साथ आया। वर्ल्ड वाइड वेब ने वैश्विक स्तर पर कनेक्टिविटी लाई, जिससे टेक्स्ट, इमेज और अंततः वीडियो को तेज़ी से साझा करना संभव हुआ। इस युग में वेबसाइट, ऑनलाइन फ़ोरम और सोशल मीडिया के शुरुआती रूपों का उदय भी हुआ, जिसने एक डिजिटल क्रांति के लिए मंच तैयार किया और संचार और संस्कृति को नया रूप दिया।

सोशल मीडिया और मोबाइल डिवाइस

डिजिटल मीडिया के निर्माण ने पारंपरिक द्वारपालों को चुनौती दी है जबकि मोबाइल डिवाइस के उदय ने

डिजिटल मीडिया की खपत को और बदल दिया, जिसमें उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित सामग्री एक प्रेरक शक्ति बन गई। 2000 के दशक के दौरान, डिजिटल मीडिया उपयोगकर्ताओं के बदलते व्यवहार और प्राथमिकताओं को समायोजित करने के लिए विकसित हुआ है। फेसबुक, ट्विटर और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म उभरे, जिससे व्यक्तियों को वैश्विक स्तर पर सामग्री बनाने और साझा करने की शक्ति मिली। स्मार्टफ़ोन और टैबलेट ने उपयोगकर्ताओं को चलते-फिरते सामग्री तक अभूतपूर्व पहुँच प्रदान की, जिससे उत्तरदायी वेब डिज़ाइन और मोबाइल ऐप का विकास हुआ। इन उपकरणों में GPS तकनीक और कैमरों के एकीकरण ने स्थान-आधारित सेवाओं और संवर्धित वास्तविकता अनुप्रयोगों के लिए द्वार खोल दिए। वर्चुअल रियलिटी (VR) और संवर्धित वास्तविकता (AR) के रूप में एक नया युग शुरू हो गया है, जो संवेदी अनुभवों की अधिकता को उजागर करता है, जिससे उपयोगकर्ता खुद को पूरी तरह से नई डिजिटल दुनिया में डुबो सकते हैं।

डिजिटल मीडिया द्वारा समाज और संस्कृति को आकार देना

डिजिटल मीडिया आधुनिक दुनिया में एक शक्तिशाली और परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है, जिसने संचार, संस्कृति और समाज को नया आकार दिया है। तकनीकी प्रगति से सक्षम, डिजिटल मीडिया भौगोलिक सीमाओं को पार कर चूका है। वास्तविक समय की कनेक्टिविटी और अन्तरक्रियाशीलता प्रदान करने के साथ यह सार डिजिटल मीडिया के विकास, प्रभाव, चुनौतियों और संभावनाओं की पड़ताल करता है। हमारे डिजिटल युग को आकार देने और सूचना, मनोरंजन तक पहुँचने और एक-दूसरे से जुड़ने के तरीके में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला जा सकता है। डिजिटल मीडिया ने आज की तकनीकी रूप से उन्नत दुनिया में सूचना के उत्पादन, वितरण और उपभोग के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंटरनेट के उदय से लेकर सोशल

मीडिया प्लेटफॉर्म के प्रसार तक, डिजिटल मीडिया ने हमें एक उत्पादक प्लेटफॉर्म दिया है जिसने हमें खुद को अभिव्यक्त करने, जुड़ने, सीखने और जीने के तरीकों को बदल दिया है। डिजिटल मीडिया के बहुमुखी आयामों में अंतर्दृष्टि प्रदान करने के साथ नवाचार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और डिजिटल युग में सूचना के लोकतंत्रीकरण के उत्प्रेरक के रूप में इसकी भूमिका पर जोर दिया है। सोशल मीडिया ने इस डिजिटल युग में हमारे संवाद करने और खुद को अभिव्यक्त करने के तरीके को बदल दिया है। सोशल मीडिया ने सामग्री निर्माण को लोकतांत्रिक बनाया है, जिससे हाशिए के समुदायों के लोगों को अपनी कहानियों, अनुभवों और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को साझा करने के लिए एक मंच दिया है। इसने पारंपरिक निगरानीकर्ताओं को चुनौती देने के साथ-साथ सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने, उपयोगकर्ता द्वारा तैयार की गई सामग्री और वायरल रुझानों पर चर्चा करने के लिए जमीनी स्तर के आंदोलनों के लिए एक आधार भी प्रदान किया है। यह डिजिटल परिदृश्य में इन प्लेटफॉर्मों की परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करते हुए, संस्कृति के प्रतिच्छेदन से उत्पन्न अवसरों और चुनौतियों का पता लगाया है। आज, सोशल मीडिया सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और पहचान निर्माण का एक मंच बन गया है जिससे व्यक्ति और समुदाय सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाने, कलात्मक कार्यों को प्रदर्शित करने और सीमाओं के पार समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का तेजी से उपयोग कर रहे हैं। सोशल मीडिया ने निश्चित रूप से सांस्कृतिक आदान-प्रदान और क्रॉस-कल्चरल समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह गलत सूचना और फर्जी खबरों की चुनौतियों का भी समाधान करता है। यह सांस्कृतिक धारणाओं और सामाजिक प्रवचन पर ऑनलाइन अफवाहों, झूठे आख्यानों और भ्रामक सूचनाओं के प्रसार के प्रभाव का पता लगाने का भी काम करता है।

यह संस्कृति के प्रतिच्छेदन से उत्पन्न होने वाले अवसरों और चुनौतियों की पड़ताल करता है। यह डिजिटल परिदृश्य में इन प्लेटफॉर्मों की परिवर्तनकारी शक्ति पर प्रकाश डालता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और पहचान निर्माण के उपकरण बन गए हैं। सोशल मीडिया नकारात्मक प्रभावों का मुकाबला करने के लिए आलोचनात्मक सोच और तथ्य-जांच के महत्व के साथ-साथ सांस्कृतिक संवेदनशीलता, सम्मानजनक जुड़ाव और सांस्कृतिक तत्वों की उत्पत्ति और महत्व को स्वीकार करने पर चर्चा करता है। सामाजिक अपेक्षाओं और व्यवहारों को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका और उनके सामाजिक सरोकारों में प्रभावशाली लोगों, मशहूर हस्तियों और लोकप्रिय रुझानों की भूमिका का पता भी लगाता है। शरीर की छवि, सौंदर्य मानकों और संस्कृति के वस्तुकरण पर सोशल मीडिया के प्रभाव पर चर्चा करता है और सकारात्मक, समावेशी और जिम्मेदार सामग्री को बढ़ावा देने के महत्व को संबोधित करता है। आज, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने हाशिए पर पड़ी आवाजों और कम प्रतिनिधित्व वाले समुदायों को सशक्त बनाया है।

समावेशन को बढ़ावा देने और हाशिए पर पड़े लोगों के दृष्टिकोण को बढ़ाने में वायरल अभियान, हैशटैग और ऑनलाइन सहायता नेटवर्क की भूमिका की जांच करते हुए सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली एजेंट के रूप में कार्य कर रहा है। यह हाशिए पर पड़ी आवाजों और कम प्रतिनिधित्व वाले समुदायों को सशक्त बनाने के काम को तेजी से आगे बढ़ाने में सक्षम रहा है। ऑनलाइन सक्रियता समुदाय निर्माण और सामूहिक कार्रवाई की शक्ति पर चर्चा में इसकी एक विशेष भूमिका रही है। यह सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए नैतिक सामग्री निर्माण, डिजिटल नागरिकता और सोशल मीडिया के जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता पर जोर देकर सांस्कृतिक और सामाजिक जिम्मेदारी की

भूमिका को भी प्रभावी ढंग से प्रदर्शित कर रहा है। सोशल मीडिया के सांस्कृतिक प्रभाव को समझकर और जिम्मेदाराना व्यवहार अपनाकर, व्यक्ति, समुदाय और संगठन सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने, हाशिए पर पड़ी आवाज़ों को सशक्त बनाने और सकारात्मक सामाजिक बदलाव को बढ़ावा देने के लिए इन प्लेटफ़ॉर्म की परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उपयोग कर सकते हैं। डिजिटल मीडिया के व्यापक प्रभाव ने हमारे संवाद करने, सूचना का उपभोग करने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भाग लेने के तरीके को फिर से परिभाषित किया है। इंटरनेट, मोबाइल डिवाइस और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के उदय ने सामग्री के प्रसार को तेज़ कर दिया है, जिससे ऐसा माहौल बना है जहाँ कोई भी व्यक्ति एक साथ निर्माता और उपभोक्ता हो सकता है। जैसे-जैसे हम डिजिटल मीडिया के दायरे में उतरते हैं, हम एक बहुआयामी परिदृश्य को उजागर करते हैं जो हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा है।

डिजिटल मीडिया के प्रक्षेप पथ, संचार गतिशीलता पर इसके प्रभाव, सांस्कृतिक आख्यानों को आकार देने में इसकी भूमिका और मनोरंजन तथा पत्रकारिता जैसे उद्योगों पर इसके प्रभाव का पता लगाता है। इसके अलावा, यह डिजिटल मीडिया के प्रसार से उत्पन्न चुनौतियों पर भी चर्चा करता है। डिजिटल मीडिया का प्रभाव सीमाओं को पार करता है, भौगोलिक विभाजन को पाटता है और दुनिया भर में व्यक्तियों को आपस में जोड़ता है। जैसे-जैसे हम इस निरंतर विकसित होते परिदृश्य में आगे बढ़ते हैं, हमारे समाज को आकार देने में डिजिटल मीडिया की भूमिका की आलोचनात्मक रूप से जांच करना और उन चर्चाओं को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण हो जाता है जो इसके परिवर्तनकारी क्षमता का दोहन करने के साथ आने वाली नैतिक जिम्मेदारियों पर विचार करती हैं। डिजिटल मीडिया की जटिलताओं को समझकर, हम सांस्कृतिक आदान-प्रदान को समृद्ध करने, सूचना तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाने और अपनी दुनिया को

एक ऐसे भविष्य की ओर ले जाने के लिए इसकी शक्ति का उपयोग कर सकते हैं जहाँ कनेक्टिविटी और रचनात्मकता पनपती है। समकालीन परिदृश्य में, डिजिटल मीडिया एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है जिसने सूचना के निर्माण, वितरण और उपभोग के तरीके में क्रांति ला दी है। अपनी गतिशील, संवादात्मक और तात्कालिक प्रकृति के कारण, डिजिटल मीडिया लोगों को पारंपरिक सीमाओं के पार जोड़ रहा है।

सूचनात्मक खुलापन डिजिटल समाज की सामाजिक संस्कृति की मुख्य विशेषताओं में से एक है। पारंपरिक समाज में, लोग दूसरों के साथ केवल अपने काम के परिणामों को साझा करने के आदी थे। डिजिटल युग के शुरुआती चरणों में भी, लोग अपनी रचनाओं के केवल अंतिम उत्पाद-मीडिया सामग्री और सोशल नेटवर्क पोस्ट साझा करते थे। दूसरे शब्दों में, उन्होंने अपनी सफलताओं को साझा किया। आज के उन्नत डिजिटल समाज में, लोगों ने लगभग हर चीज को साझा करना शुरू कर दिया है। वे न केवल परिणाम बल्कि रचनाओं की प्रक्रिया को भी दूसरों के साथ साझा करते हैं। यह सिद्धांत नियमित अभ्यास के रूप में अधिक से अधिक सार्वभौमिक, नियमित और वांछनीय होता जा रहा है। यह साझाकरण रचनाओं के स्वामित्व के पारंपरिक सिद्धांतों का खंडन करता है। साथ ही, यह डिजिटल समाज की सामाजिक संस्कृति की एक आवश्यक विशेषता को दर्शाता है। डिजिटल समाज की विशेषता सृजन के पारंपरिक रूपों से अधिक खुले स्थान की ओर संक्रमण है, जहाँ लोग विभिन्न चरणों में अपनी सामग्री साझा करते हैं।

यह परिवर्तन प्रतीकात्मक और महत्वपूर्ण है क्योंकि यह रचनात्मकता की नई विशेषताओं और मानवीय संबंधों और मानवीय अनुभव के पर्याप्त संशोधन को दर्शाता है। आज हम हर चीज को लगातार साझा करने की सामान्य प्रवृत्ति को पारदर्शिता कहते हैं, जो मानवीय अंतःक्रियाओं की पारदर्शिता और समाज की पारदर्शिता की ओर बढ़ने

की एक प्रक्रिया है। यह दूसरों के साथ किसी के संबंधों से जुड़े स्वयं के पहलुओं को संदर्भित करता है। डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने संबंधपरक स्वयं की धारणा की एक नई समझ के विकास को जन्म दिया है। मार्टिन बुबर ने तर्क दिया कि स्वयं केवल दूसरे के साथ संबंध में ही खुद को प्रकट करता है। इस दावे की पुष्टि आज सामाजिक नेटवर्क की घटना से होती है, जो लोगों के बीच संबंधों को लगभग अनंत प्रकार के सामाजिक संबंधों को बनाने के अभूतपूर्व अवसर द्वारा सुगम बनाता है। तकनीकी-वैज्ञानिक तर्कसंगतता वर्तमान संस्कृति में लगभग हर क्षेत्र को नया रूप देने में एक आवश्यक भूमिका निभा रही है।

चुनौतियाँ

डिजिटल मीडिया कई लाभ प्रदान करता है, यह अपनी चुनौतियों से रहित नहीं है। फर्जी खबरें और गलत सूचनाएँ तेज़ी से फैल सकती हैं, जिससे लोगों का भरोसा कम हो सकता है और सार्वजनिक संवाद की स्थिति विकृत हो सकती है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म की लत ने मानसिक स्वास्थ्य और सेहत पर उनके प्रभाव के बारे में चिंताएँ बढ़ा दी हैं, खासकर युवा पीढ़ी के बीच। इसके अलावा, डेटा गोपनीयता, एल्गोरिदम संबंधी पूर्वाग्रह और तकनीकी दिग्गजों के हाथों में सत्ता के संकेंद्रण के मुद्दों ने विनियमन और नैतिक मानकों की आवश्यकता के बारे में बहस छेड़ दी है। डिजिटल मीडिया ने मीडिया उद्योग में गहरा व्यवधान पैदा किया है। पारंपरिक प्रकाशन, प्रसारण और विज्ञापन मॉडल को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने चुनौती दी है। स्ट्रीमिंग सेवाओं के उदय ने मनोरंजन की खपत को बदल दिया है, दर्शकों को उनकी पसंद के अनुसार ऑन-डिमांड सामग्री प्रदान की है। विज्ञापन परिदृश्य भी बदल गया है, उपयोगकर्ता डेटा के आधार पर लक्षित विज्ञापन आदर्श बन गए हैं। हालाँकि, ये प्रथाएँ उपयोगकर्ता की गोपनीयता और हेरफेर की संभावना के बारे में नैतिक चिंताएँ बढ़ाती हैं।

निष्कर्ष

जैसे-जैसे हम डिजिटल परिदृश्य में आगे बढ़ रहे हैं, हम

अपने आस-पास के वैश्विक कनेक्शनों से जुड़ रहे हैं, और विभिन्न देशों की संस्कृति और समाज को न केवल समझने में सक्षम हैं, बल्कि उनकी जीवनशैली, भोजन, कपड़ों से लेकर उनके मूल और विकास तक को भी देख पा रहे हैं। डिजिटल मीडिया ने हमारे संवाद करने, सूचना का उपभोग करने और संस्कृति का अनुभव करने के तरीके को मौलिक रूप से बदल दिया है। डिजिटल मीडिया आज हर दिन समाज और संस्कृति को नए आयाम दे रहा है, जिसके कारण समाज तेज़ी से बदल रहा है और संस्कृति एक जगह से दूसरी जगह प्रभावी ढंग से फैल रही है।

इसका प्रभाव समाज के हर कोने तक पहुँच गया है, व्यक्तिगत व्यवहार को प्रभावित कर रहा है, सांस्कृतिक आख्यानो को आकार दे रहा है और पारंपरिक उद्योगों को बाधित कर रहा है। मानवीय रचनात्मकता और सरलता दोनों ही डिजिटल मीडिया के विकास का प्रमाण हैं। पिक्सलेटेड ग्राफ़िक्स और बेसिक साउंड के साथ अपनी विनम्र शुरुआत से लेकर आज की इमर्सिव वर्चुअल रियलिटी तक, डिजिटल मीडिया ने लगातार संभव की सीमाओं को आगे बढ़ाया है। यह विकास न केवल तकनीकी प्रगति को दर्शाता है, बल्कि उन बदलते तरीकों को भी दर्शाता है जिनसे हम तेज़ी से डिजिटल होती दुनिया में जुड़ते हैं, संवाद करते हैं और खुद को अभिव्यक्त करते हैं।

डिजिटल मीडिया की क्षमता का उपयोग करते हुए विभिन्न आवाज़ों को बढ़ाने और दुनिया के बारे में हमारी सामूहिक समझ को समृद्ध करने के साथ-साथ गलत सूचना और गोपनीयता संबंधी चिंताओं जैसी चुनौतियों का समाधान करना भी ज़रूरी है। डिजिटल तकनीक जिस गति से आगे बढ़ रही है, उसका मानवता ने पहले कभी सामना नहीं किया है, विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच तनाव भी तेज़ी से बढ़ रहा है। लेकिन डिजिटल तकनीकों जैसे कि एआई, रोबोटिक्स, जेनेटिक इंजीनियरिंग, इंटरनेट आदि के कारण बहुत बड़े बदलाव हो रहे हैं। इनका उपयोग विभिन्न समाजों और राष्ट्रों द्वारा अलग-अलग

तरीकों से किया जा रहा है, जो मुख्य रूप से सांस्कृतिक दृष्टिकोण, मानदंडों और परंपराओं पर आधारित हैं।

निश्चित रूप से, सोशल मीडिया का प्रभाव चाहे कितना भी नकारात्मक क्यों न हो, यह भी एक परम सत्य है कि आज समाज में जो नए बदलाव आए हैं और संस्कृति में जो परिष्कार हुआ है, जिसने तर्क, सत्य और वैज्ञानिक सोच को बढ़ाया है, अगर इसके लिए कोई जिम्मेदार है, तो वह इस डिजिटल युग का सोशल मीडिया ही है।

संदर्भ :-

1. निकोलस बॉटल एन एम (2015) संगीत अंतरसांस्कृतिकता के साधन के रूप में लोकगीत के माध्यम से एक शिक्षाप्रद प्रस्ताव लोकगीत पत्रिका 401:59-70
2. कॉकटेल मार्केटिंग (2021) टिकटॉक सांख्यिकी कॉकटेल मार्केटिंग - डिजिटल मार्केटिंग एजेंसी 13
3. कोलस्क्वेयर (2022) टिकटॉक आँकड़े जिन्हें आपको कोलस्क्वेयर में जानना चाहिए
4. टिकटॉक (2020) परिघटना: यह सोशल नेटवर्क कैसे आया? आईलाइफ बेल्ट
5. टिक टॉक के 20 सबसे ज़्यादा पसंद किए जाने वाले रुझान वायरल 2021
6. ड्राफ्टिंग (2022) टिकटॉक का विकास, सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला सोशल नेटवर्क। मार्केटिंग और विज्ञापन न्यूज़ मैगज़ीन का नारा
7. टिकटॉक (2019) टिकटॉक वर्ल्ड ने मार्केटिंग के नए युग की शुरुआत की। न्यूज़रूम। 8 स्वदेशी टिकटोकर्स: सामाजिक नेटवर्क से सांस्कृतिक सशक्तिकरण
8. स्वदेशी टिकटॉकर: सोशल नेटवर्क से सांस्कृतिक सशक्तिकरण
9. लैंगलॉइस, जी. सोशल मीडिया और स्वयं की देखभाल। डिजिटल अस्तित्व में: डिजिटल संस्कृति में ऑन्टोलॉजी, नैतिकता और पारलौकिकता;
10. श्वार्ज़, जे.ए. उमवेल्ड और व्यक्तित्व: डिजिटल सिग्नल और तकनीकी अस्तित्व। डिजिटल अस्तित्व में: डिजिटल संस्कृति में ऑन्टोलॉजी, नैतिकता और पारलौकिकता; लेगरक्विस्ट, ए., एड.; रूटलेज: न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसए, 2019; पृष्ठ 611
11. एसरबी, ए. डिजिटल युग में सांस्कृतिक विकास; ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफोर्ड, यूके, 2020
12. चैन, जी.एम. और झांग, के (2010) वैश्विक समाज में नया मीडिया और सांस्कृतिक पहचान। आर. ताइवो (एड) में
13. चर्चा व्यवहार और डिजिटल संचार, भाषा संरचना और सामाजिक
14. एडेलमैन, एम.बी. (1988)। क्रॉस कल्चरल एडजस्टमेंट: सामाजिक समर्थन पर एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य।
15. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ इंटरकल्चरल रिलेशन्स, 12183-2041 [https://doi.org/10.1016/0147-1767\(88\)90015-6](https://doi.org/10.1016/0147-1767(88)90015-6)
16. अल-शर्की, एल. हाशिम, के. और कुटबी, आई (2015)। छात्रों के सामाजिक व्यवहार पर सोशल मीडिया के प्रभाव की धारणा। कला और विज्ञान के छात्रों के बीच तुलना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल साइंस, 2(4), 122-1311
17. <https://www.researchgate.net/publication/380435235>
18. <https://www.linkedin.com/pulse/evolution-social-media-shaping-society-culture-reshma-rajayupac>
19. <https://journals.sagepub.com/doi/10.1177/02632764221103527>
20. <https://coed.dypvp.edu.in/educational-resurgence-journal/documents/Article8-ver1.pdf>
21. <https://journalism.university/digital-media/social-media-influence-arts-culture-education/>
22. <https://www.proquest.com/scholarly-journals/culture-society-digital-age/docview/2535233926/se-2>
23. <https://medium.com/illumination/the-impact-of-social-media-on-society-navigating-the-digital-age-b61a60d57fb1>